दृष्टि The Vision

सामान्य अध्ययन (टेस्ट - XII)

GENERAL STUDIES (Test - XII)

मॉड्यूल - XII / Module - XII

DTVF/18–M–**GS12**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 12 , 10/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravish

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

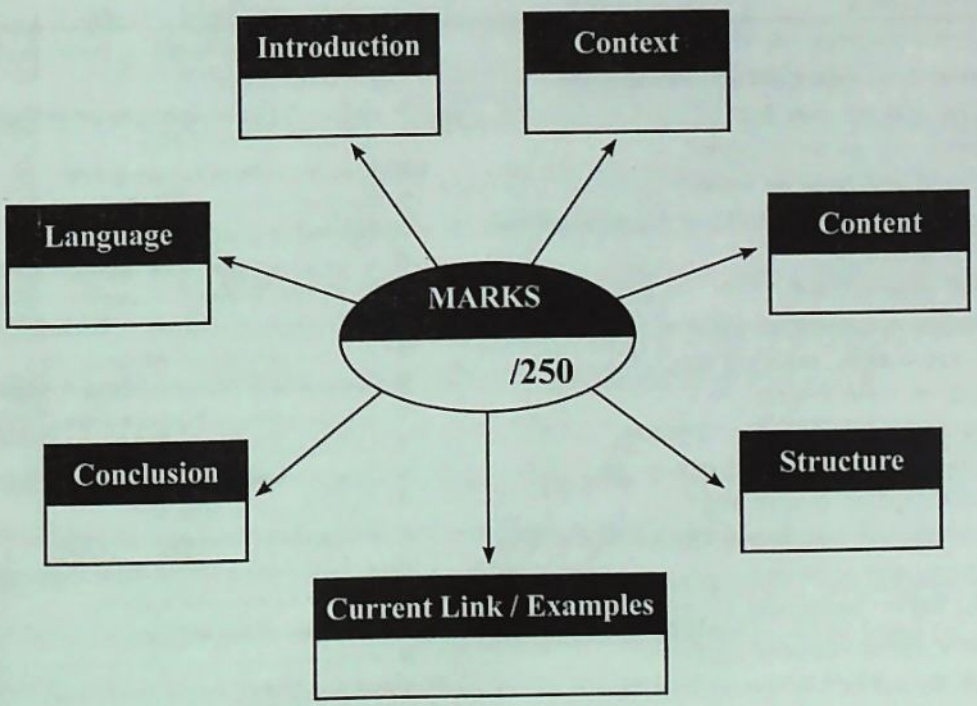

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standard of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

1. 'अमरावती मूर्तिकला अपने धार्मिक तत्त्व को आत्मसात करते हुए लोकोन्मुखी रही है।' विश्लेषित कीजिये। (200 शब्द) 12.5

'The Amravati sculpture incorporated the religious element and had a popular base.' Analyze. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ईसा की दूसरी व तीसरी शताब्दी में आन्ध्रप्रदेश के अमरावती व नागार्जुनकोंडा आदि स्थलों पर विकसित होने वाली यह मूर्तिकला की शैली दक्षिण भारत में मूर्तिकला की महत्वपूर्ण शैली मानी जाती है

प्रमुख विशेषताएँ

(क) पैनलों या फलकों पर मूर्तियों का निर्माण
(ख) स्फेद संगमरमर का प्रयोग।
(ग) बौद्ध धर्म के साथ-साथ, जैन, हिन्दु धर्म की मूर्तियों का समावेशन करना।
(घ। मथुरा शैली का भी प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

अमरावती शैली के विकास में धर्म की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है क्योंकि द्वितीय- तृतीय शताब्दी में बौद्ध धर्म के दक्षिण में प्रचार-प्रसार के कारण (प्रमुखतः अशोक की नीति) एवं मथुरा आदि शैलियों के दक्षिण की स्थानीय शैलियों के साथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

मिश्रण के कारण यह कला विकसित हुई है। प्रमुखता बुद्ध, जैन तीर्थंकरों एवं हिन्दू देवी देवताओं की पहियों पर विद्यमान मूर्तियाँ इस शैली में बनाई गई हैं। नागार्जुनकोंडा के स्तूप के तोरण द्वारों एवं भीतरी दीवारों एवं स्तंभों पर स्थित मूर्तियाँ इसका प्रमुख उदाहरण है।

लोकोन्मुखता की बात करें तो इस कला के विकास में स्थानीय कारीगरों की भूमिका, धार्मिक के साथ-साथ धर्मेत्तर विषयों पर आधारित मूर्तियों का होना इसकी पुष्टि करता है। तत्कालीन राजाओं की मूर्तियाँ भी इसी शैली में मिलती है साथ ही बौद्ध धर्म की जातक-कथाओं के चित्रों में विद्यमान लोकतत्व तत्कालीन समाज की परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं एवं रीति रिवाजों का ही निदर्शन कराता है।

इस प्रकार धर्मनिरपेक्षता एवं धार्मिकता दोनों प्रकार के चित्रों का समावेशन कर यह मूर्तिकला लोकतत्व को भी धारण करती

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ खें।

se do not write ing except the ion number in pace)

६।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

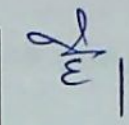

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. मौर्योत्तरकालीन कला व संस्कृति के विकास के संदर्भ में उत्तरदायी सामाजिक व धार्मिक कारणों का मूल्यांकन कीजिये। (200 शब्द) 12.5

Evaluate the social and religious factors responsible for the development of Post-Mauryan art and culture. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्योत्तर काल के राजनीतिक इतिहास की बात की जाये तो सबसे पहले शुंग, कण्व का इतिहास आता है, उसके बाद उत्तरी पश्चिमी भाग से विदेशियों का आक्रमण भी जारी रहता है। दक्कन में सातवाहन वंश तो सुदूर दक्षिण में चोल, चेर, पांड्य के बाद पल्लवों आदि का विकास दिखलाई देता है

मौर्योत्तरकालीन समाज

(क) विकेन्द्रित समाज
(ख) विदेशी आक्रमण
(ग) बौद्ध धर्म का प्रसार व पश्चात् हिंदू धर्म में भी सुधारवादी आंदोलन
(घ) विदेशी व्यापार में वृद्धि

कला एवं संस्कृति पर प्रभाव

(क) स्थापत्यकला

- स्तूपों का चरम विकास पर बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखाई देता है
- चैत्य एवं विहार - बौद्ध धर्म का प्रभाव

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

- गुफा स्थापत्यकला - जैन व बौद्ध धर्म का प्रभाव
- मंदिर स्थापत्यकला - भागवत. धर्म व हिंदू सुधारकारी आंदोलन का प्रभाव

(ख) मूर्तिकला

- गंधार शैली - बौद्ध धर्म का प्रभाव
- मथुरा शैली - तीनों धर्मों की मूर्तियाँ
- अमरावती शैली - दक्कन में स्थानीय तत्वों व उत्तरी भारतीय शैली से निर्मित

[A] - गंधार मूर्तिकला पर विदेशी प्रभाव (यूनानी व रोम दर्शनीय है।

(ग) चित्रकला :- अजन्ता, एलोरा आदि की गुफाओं के भित्तिचित्रों पर मुख्यतः बौद्ध एवं गौणतः अन्य धर्मों का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

अन्य कलाएँ :-

- संगम साहित्य की धर्मनिरपेक्षता पर तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव
- सिक्का स्थापत्यकला - शुद्ध सोने के सिक्के यूनानियों के प्रभाव से
- सिक्कों पर इतिहासबोध का आना भी विदेशी प्रभाव के कारण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा हिंदू धर्म सुधार आदि भी तत्कालीन सामाजिक व धार्मिक कारणों से प्रेरित थे।

3. 'संगम साहित्य से प्राचीन तमिल देश के समाज व संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है।' विश्लेषण कीजिये। (200 शब्द) 12.5

'The Sangam Literature provides insights into the society and culture of Tamil land.' Analyze. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से ईसवी सन की दूसरी - तीसरी शताब्दी तक दक्षिण भारत में कवियों के सभाओं के द्वारा जो साहित्य रचा गया, वह संगम साहित्य कहलाता है। उस काल में मुख्यतः तीन संगम हुए जिसमें विभिन्न प्रकार का साहित्य रचा गया। संगम ग्रन्थों में मेलकणक्कु, पुत्तपाट्ट के साथ-साथ तोलकाप्पियम एवं मणिमेखलै जैसे महाकाव्य भी प्रमुख है।

सामाजिक पक्ष की बात की जाये तो संगम ग्रन्थों को धर्मनिरपेक्ष साहित्य माना जा सकता है, जिसमें धार्मिक सन्दर्भों का कम विवेचन मिलता है -

(क) इनका काफी बड़ा भाग वीरों की प्रशंसा व उपलब्धियों का वर्णन करता है।

(ख) राजाओं की प्रशंसा, वर्णन, कारनामों का विवेचन व इतिहास भी प्राप्त होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तोलकापियम एवं मणिमेकलै जैसे महाकाव्यों में तत्कालीन समाज की आर्थिक राजनीतिक एवं सामाजिक पक्षों का विस्तृत वर्णन किया गया है

(घ) तमिल कवियों में अंदाल नाम की महिला के नाम से समाज की महिला के प्रति उदार दृष्टि का पता चलता है

(ङ) कन्नगी आदि नारियों के सम्मान में महाकाव्य लिखना इसी बात का द्योतक भी है।

सांस्कृतिक ज्ञान के बारे में तमिल ग्रन्थों में तत्कालीन समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों पूजा पद्धति, धार्मिक पक्ष का वर्णन मिलता है। तमिल ग्रन्थों में अशोक के सांस्कृतिक कार्यों का भी वर्णन मिलता है। फिर भी तत्कालीन कलाएँ तथा स्थापत्यकला के बारे में कावेरी-पत्तनम, उरैयूर का सूती वस्त्र उत्पादक होना, विभिन्न बंदरगाहों, विदेशी व्यापार, भूमि की उर्वरता, राजाओं के आक्रमण आदि के वर्णन में ही संस्कृति की कुछ झलक मिल जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. 'रामानुजाचार्य ने भक्ति आंदोलन को दार्शनिक स्वरूप देने के साथ-साथ लोकोन्मुखी आधार भी प्रदान किया।' विवेचना कीजिये। (200 शब्द) 12.5

'Ramanujacharya gave the Bhakti movement a philosophical hue and provided it with popular base.' Elucidate. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

9वीं शताब्दी में शंकराचार्य द्वारा ~~अद्वैत~~ म अद्वैतवाद की स्थापना करने के कारण भक्ति-मार्ग हेतु अवरोध पैदा हो गया। शंकर ने आत्मा व ब्रह्म को एक बताकर (अहं ब्रह्मास्मि) ज्ञान-मार्ग को ही ब्रह्म की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग बता दिया और भक्ति की भूमिका को ज्ञान-प्राप्ति के एक साधन के रूप में सीमित कर दिया।

शंकर के 2-3 सदियों बाद रामानुजाचार्य ने '<u>विशिष्टाद्वैतवाद</u>' का मत देकर भक्ति-मार्ग के अवरोधों को दूर किया। इसी दर्शन के द्वारा उन्होंने भक्ति को दार्शनिक स्वरूप भी प्रदान किया।

(क) उन्होंने जगत को ब्रह्म की का विवर्त या आभास न मानते हुए वास्तविक बतलाया।

(ख) जगत को ब्रह्म का ही अंश बतलाया।

(ग) उनके अनुसार ब्रह्म ही भक्तों के उद्धार के लिये सगुण ईश्वर के रूप में

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न ... के अतिरिक्त कुछ ... (... do not write ... except the ... number in ... space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अवतार लेता है।

(घ) भक्तिमार्ग के द्वारा ही ब्रह्म की प्राप्ति संभव है, ज्ञान का महत्व केवल भक्ति की गुणवत्ता बढ़ाने वाले कारक के रूप में है।

(ङ.) उन्होंने अंशी- अंश का भेद स्वीकार करते हुए भक्ति के द्वारा ब्रह्म की सायुज्य मुक्ति को संभव बताया।

इस प्रकार ज्ञान मार्ग की शुष्कता व नीरसता को भक्ति की सरसता, भावनाओं के साथ भरने का कार्य रामानुज के दर्शन ने प्रदान किया।

- उन्होंने सगुण ईश्वर की भक्ति पर बल देते हुए प्रेमपूर्वक नवधा प्रकारों से ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग खोल दिया।

- रामानुज ने वर्ग भेद को मिटाकर निचले वर्ग के लोगों हेतु भी प्रपत्तिमार्ग की स्थापना कर भक्ति के द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति एवं मुक्ति को संभव बताया।

इस प्रकार अपने दर्शन के द्वारा भक्ति रूपी रसात्मक मार्ग की स्थापना के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

साथ-साथ भक्ति को समावेशी बनाने का कार्य भी रामानुज ने किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. मुगल स्थापत्यकला की पित्रादुरा शैली ने तत्कालीन भवनों की शिल्प कला में अभूतपूर्व परिवर्तन किया। विश्लेषण कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The pietra dura style of Mughal art brought out striking changes to the architecture of contemporary buildings. Analyze. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पित्रादुरा' की शैली में विभिन्न आकृतियों पर रंगीन पत्थरों, धातुओं, मनकों आदि के साथ जड़ाई की जाती है ताकि इमारतों के रूप सौन्दर्य में वृद्धि की जा सके।

मुख्यतः फारसी शैली से प्रभावित इस प्रकार का काम सर्वप्रथम एतमाउद्दौला के मकबरे में दिखने को मिलता है। अगर इस शैली का चरमोत्कर्ष देखना हो तो शाहजहाँ का ताजमहल एक बेहतर उदाहरण है जहाँ की सादगी के साथ-साथ पित्रादुरा शैली का प्रयोग इसके सौन्दर्य में चार चाँद लगा देता है।

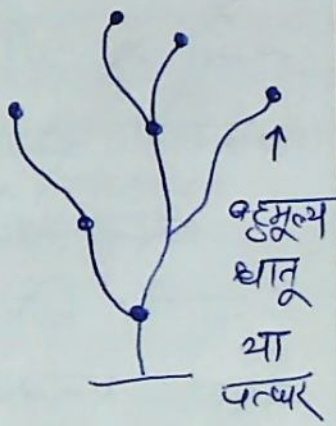

पित्रादुरा शैली का तत्कालीन भवनों की शिल्पकला पर निम्न प्रभाव पड़ा-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(क) इसने सजावट की एक नयी शैली प्रदान की, जिसमें स्थानीय आकृतियों पर बहुमूल्य रंगीन पत्थरों की बारीकी से सजावट कर सौन्दर्य में वृद्धि की।

(ख) मुगलकालीन भवनों की प्रसिद्धि का एक प्रमुख कारण यह शैली भी है।

(ग) मुख्यतः फारसी प्रभाव से लेते हुए भी स्थानीय तत्वों का भी मिश्रण है जैसे स्थानीय आकृतियाँ, स्थानीय पत्थरों का प्रयोग आदि।

परन्तु यदि तार्किक विश्लेषण करें तो तत्कालीन शिल्पकला में अभूतपूर्व परिवर्तन का कारण एकमात्र यह शैली नहीं थी, अन्य कई तत्व भी प्रमुख थे जैसे -

(क) कुफी, अरबस्क पद्धति

(ख) पच्चीकारी, पिस्ताखों का प्रयोग

(ग) अग्रसंक्षेपण (forsightening) तकनीक

(घ) चारबाग परंपरा

(ङ) संगमरमर व दोहरे गुंबद का प्रयोग।

इस प्रकार पित्राडुरा शैली शिल्पगत स्तर के परिवर्तनों का एक कारक है, एकमात्र

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

स स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ

do not write
g except the
number in
ce)

कारक नहीं।

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

6. एलोरा का कैलाश मंदिर अपनी शैलकृत वास्तुकला का अविश्वसनीय उदाहरण है। विवेचना कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The Kailash temple of Ellora is an incredible example of rock-cut architecture. Comment. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एलोरा की गुफाएँ जिन कारणों से प्रसिद्ध हैं वे हैं- गुफा स्थापत्यकला का चरमोत्कर्ष, भित्तिचित्रों की सजीवता एवं जैन, बौद्ध हिंदू तीनों धर्मों की प्रधानता।

यदि हिंदू तत्व की बात करें तो एलोरा का कैलाश मंदिर एक महत्वपूर्ण उदाहरण है जो गुफा संख्या 16 में स्थित है। अपनी संरचना, मजबूती के कारण इसे स्थापत्यकला का अजूबा भी कहा जाता है। राष्ट्रकूट शासक द्वारा निर्मित इस मंदिर की दो-तीन विशेषताएँ एवं शैलकृत वास्तुकला का अविश्वसनीय उदाहरण बनाती है जैसे-

(क) मंदिर का निर्माण पहाड़ी को काटकर किया गया है परन्तु अन्य सभी संरचनाओं के विपरीत इस मंदिर में काटने का काम ऊपर से शुरू होकर नीचे तक आया है अर्थात- मंदिर का ऊपरी शिखर पहले

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थापित किया गया एवं आधार भाग बाद में

(ख) इसकी मजबूती इसकी दूसरी विशेषता है। कहा जाता है कि औरंगजेब द्वारा इसे तुड़वाने का भी प्रयास किया गया परंतु वह असफल रहा।

(ग) मंदिर में विद्यमान भित्तिचित्र व मूर्तियाँ भी अत्यन्त मनोहारी है।

(घ) चट्टान काटकर बनाई गई सबसे विशालतम संरचनाओं में यह मंदिर भी अपना स्थान रखता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विशेषताओं के द्वारा हम कह सकते है कि यह मंदिर अपनी कुछ विशेषताओं में अद्वितीय है जो इसे स्थापत्यकला का अद्भुत भी घोषित करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

7. औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के साथ-साथ उपनिवेशवादी प्रशासनिक व न्यायिक व्यवस्था ने भी भारतीय कृषकों की कमर तोड़ दी। स्पष्टीकरण कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The colonial economic policies coupled with the administrative and judicial system wreaked havoc on Indian farmers. Elucidate. (200 words) 12.5

भारत में अंग्रेजों के 200 वर्षों के शासन में जो वर्ग इसके दुष्प्रभावों की सर्वाधिक चपेट में आया वह किसान वर्ग ही था। अंग्रेजों की सभी नीतियों का शिकार यह वर्ग रहा।

आर्थिक नीतियाँ

(क) भू राजस्व नीतियाँ (महलवाड़ी, जमींदारी, रैय्यतवाड़ी) की शोषणपरक व्यवस्था, उच्च लगान व्यवस्था एवं जमींदारों के अत्याचारों के कारण किसान का दमन।

(ख) भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के नष्ट होने कारण कृषि पर दबाव बढ़ा।

(ग) किसानों की के परंपरागत अधिकार छीन लिये गये।

(घ) कृषि के सुधार जैसे- उन्नत बीज, सिंचाई, उर्वरकों आदि का विकास नहीं किया गया।

(ङ) कृषि का वाणिज्यिकरण जिसका लाभ भी किसानों को नहीं मिला व खाद्य फसलों की कमी के कारण भुखमरी भी पैदा हुई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

प्रशासनिक व्यवस्था :- प्रशासन के स्तर पर जमींदारों को किसानों का मालिक घोषित कर दिया था। जिले में भू-राजस्व का प्रमुख जिला कलेक्टर होता है। यहाँ बताना आवश्यक है कि ये कलेक्टरों को किसानों की वास्तविक स्थिति का कोई ज्ञान नहीं होता था।

→ प्रशासन द्वारा भू-राजस्व की दरें अत्यन्त कठोरता से बढ़ाकर उगाही भी उतनी ही कठोरता से की जाती थी। अकालआदि के समय भी कोई छूट नहीं मिलती है।

→ बागानी कृषि आदि में यूरोपीयों का वर्चस्व था जिनकी प्रशासनिक अधिकारियों से साँठ-गाँठ थी।

न्यायिक व्यवस्था :-

(क) जज मुख्यतः यूरोपीय थे जिन्हें न तो भारतीय परिदृश्य की जानकारी थी, न ही सहानुभूति।

(ख) बागान मालिक, जमींदारों, साहूकारों आदि के द्वारा अनुबंध, ऋणपत्र आदि हस्ताक्षर करवाए जाते थे। आधुनिक न्यायिक व्यवस्था के कारण कोई विवाद होने के

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करब भोला-भाला निरक्षर किसान न्यायालय में अपने वाद को साबित नहीं कर पाता था, फलस्वरूप ~~उसे~~ ~~केस~~ वह वाद ~~हार~~ हार जाता था।

इस प्रकार न केवल आर्थिक व्यवस्था, बल्कि प्रशासनिक व न्यायिक व्यवस्था भी किसानों के हितों के प्रतिकूल थी जिसने अन्ततः कृषकों की कमर तोड़ दी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना अखिल भारतीय स्तर पर भारतीय राष्ट्रवाद की पहली सुनियोजित अभिव्यक्ति थी। विश्लेषण कीजिये। (200 शब्द) 12.5
The establishment of Indian National Congress was the first systematic expression of Indian nationalism. Analyze. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

1857 की क्रांति के बाद ही अंग्रेजों की प्रतिक्रियावादी नीतियों के कारण शिक्षित भारतीयों का अंग्रेजी प्रणाली की उपयुक्तता का भ्रम टूटना आरंभ हो गया। अब वे अंग्रेजी नीतियों की कुटिलता समझकर उसकी आलोचना करने लगे थे। आधुनिक शिक्षा के प्रचार, प्रेस, पत्र-पत्रिकाओं, रेलवे, संचार प्रणाली एवं वैश्विक घटनाओं का प्रसार जैसे कारकों ने भारतीय शिक्षित व्यक्तियों के हृदयों में राष्ट्रवाद की ~~सुगबुगाहट~~ सुगबुगाहट पैदा कर दी थी।

भारतीयों ने राष्ट्रवाद के प्रसार व जनता की शिक्षा व जागरूकता के प्रसार हेतु अनेक संगठन बनाये जैसे-

(क) कलकत्ता में जमींदारी सभा, ईस्ट इंडियन एसोसिएशन जैसे राजनीतिक संगठन व ब्रह्म समाज जैसे धार्मिक सुधार संगठन भी चल रहे थे।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ~~मुंबई~~ बंबई में भी बॉम्बे प्रेसिडेंसी कांग्रेस व मद्रास में मद्रास महाजन सभा। किन्तु, इन सभी संगठनों में परस्पर एकता का अभाव, मुख्यतः कुछ शिक्षित वर्गों तक सीमित होना, क्षेत्रीय राजनीतिक प्रश्नों को ही उठाना, स्थानीय नेतृत्व व क्षेत्र आदि कारणों से राष्ट्रवादी अभिव्यक्ति उचित रूप में न हो सकी।

1885 में एक सेवानिवृत्त सिविल सेवक की सहायता से विभिन्न संगठनों ने एक अखिल भारतीय संगठन 'कांग्रेस' की स्थापना की। उद्देश्यों एवं कार्यप्रणाली की दृष्टि से इसे राष्ट्रवाद की पहली सुनियोजित अभिव्यक्ति माना जा सकता है जैसे -

(क) जनता में शिक्षा, जागरूकता व राष्ट्रीयता की भावना जगाना।

(ख) हर वर्ष अधिवेशन, अधिवेशन भी अलग राज्य / शहर में

(ग) सभी धर्मों का प्रतिनिधित्व एवं अध्यक्ष पद भी सभी धर्मों हेतु खुला रहता था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) सम्पूर्ण भारत को स्वायत्तता व कुछ अधिकार देने हेतु प्रयास करना।

इस प्रकार अपने उद्देश्यों एवं कार्यपद्धतियों द्वारा कांग्रेस ही राष्ट्रवाद की प्रथम सुनियोजित अभिव्यक्ति मानी जा सकती है। परन्तु, पुरानी संस्थाओं के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, उन्होंने ही कांग्रेस के गठन हेतु आधार प्रदान किया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

9. धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक व्यवहारों के बीच अंत:संबंध के कारण सामाजिक सुधार से पूर्व धार्मिक सुधार आवश्यक शर्त मानी जाती है। कथन के संदर्भ में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन का उल्लेख कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The correlation between religious beliefs and social practices makes it imperative for religious reforms to precede social reforms. Discuss the socio-religious reform movements in this context. (200 Words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धार्मिक आस्थाओं एवं सामाजिक व्यवहारों के बीच प्रत्यक्ष संबंध होता है जैसे हिंदु धर्म में विवाह दो आत्माओं का मिलन, व जन्मों का बंधन आदि माना जाता है तो मुस्लिम धर्म में एक समझौता। भारत में सामाजिक सुधार हेतु धार्मिक सुधारों का किया जाना अपरिहार्य था क्योंकि सभी सामाजिक बुराइयाँ धर्म से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षत: जुड़ी हुई थी।

(क) सतीप्रथा के पीछे पुराणों के पाठ जिम्मेदार थे

(ख) बाल विवाह, कन्या हत्या, बालिका विधवा की दुर्दशा के पीछे पुत्र का सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पर्क करवाना जैसे धार्मिक विश्वास जिम्मेदार थे।

(ग) वस्तुत: धर्म की दीवारें ही थी जो भारतीय समाज को कूपमण्डूक बना रही थी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और सब आधुनिक मूल्यों को अपनाने से रोक रही थी।

(घ) शूद्रों, दलितों की निम्न स्थिति के पीछे वर्ण व्यवस्था, मनुस्मृति जैसे ग्रन्थों में निहित व्याख्या का होना।

~~अतः इन कारणों से~~

(ङ) ग्रन्थों में निहित 'ब्रह्म' आदि की अवधारणा ने भारतीयों को जड़ कर दिया था। वे संतोष में रहकर सक्रियता को महत्वहीन मानते थे।

इसी कारण राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, दयानन्द सरस्वती जैसे सुधारकों ने धार्मिक सुधार के साथ सामाजिक परिवर्तन करने की नीतियाँ अपनाई क्योंकि वे जानते थे कि धार्मिक भावोद्रेकों में जकड़े आडम्बरपूर्ण समाज ने भारतीय सामाजिक प्रगति को जड़ कर दिया है और भारत पराधीन हो गया है।

अतः सुधारकों ने सामाजिक बुराइयों की समाप्ती के तर्कों हेतु भी धार्मिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ नहीं।
ase do not write thing except the stion number in space)

ग्रन्थों की पुनर्व्याख्या की जैसे - राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध वेदों को आधार बनाया, समाज की जड़ता को मिटाने हेतु बहुदेववाद, आडम्बरों, मूर्तिपूजा, कर्मकांडों को समाप्त करने का प्रयास किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

10. स्वदेशी आंदोलन का दायरा ब्रिटिश विरोध तक सीमित न होकर कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान एवं उद्योग के क्षेत्रों तक था। विश्लेषण कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The Swadeshi Movement was not limited to opposing the British but extended to the fields of art, literature, music, science and industry as well. Analyse. (200 Words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1905 में हुए बंगाल विभाजन के विरुद्ध हुए 'बंग-भंग' आंदोलन ने आगे बढ़कर स्वदेशी आंदोलन के रूप में राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया, जिसकी बागडोर उग्रपंथियों के हाथ में थी। इन नेतृत्वकर्ताओं ने भारतीयों में गरिमा, आत्मनिर्भरता एवं हीनता ग्रन्थि को मिटाने हेतु स्वदेशी को अपनाने व विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का बीड़ा उठाया। इन प्रयासों की अभिव्यक्ति विभिन्न स्तरों पर हुई-

(क) विरोध के रूप में 'निष्क्रिय प्रतिरोध' जैसी नई अवधारणा का विकास

(ख) आचार्य प्रफुल्ल द्वारा 'बंगाल स्वदेशी केमिकल स्टोर्स' की स्थापना। इसी प्रकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी विभिन्न स्वदेशी स्टोर्स को खुलवाने में मदद की।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बंगाली साहित्य के विकास में योगदान दिया। प्रसिद्ध 'अमार सोनार बंगला' इसी आंदोलन के दौरान लिखा गया।

(घ) चित्रकला के स्तर पर अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय पद्धति की तर्ज पर प्रसिद्ध 'भारतमाता' का चित्र बनाया।

(ङ) शिक्षा के स्तर पर 'बंगाल शिक्षा परिषद' की स्थापना की गई एवं विभिन्न कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिनकी बागडोर अरविन्द घोष जैसे नेताओं ने संभाली।

(च) उद्योगों के स्तर पर स्वदेशी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन दिया गया। 1907 में रिशरा में जूट मिल की स्थापना इसका प्रमुख उदाहरण है।

इस प्रकार न केवल शिक्षा विरोध प्रदर्शन के स्तर पर बल्कि अन्य क्षेत्रों के

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुनर्विकास में भी स्वदेशी आंदोलन ने महत्ती भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

11. होम रूल लीग ने भावी राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्रीय विस्तार के साथ-साथ जुझारू योद्धा तैयार करने का कार्य किया। विवेचना कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The Home Rule League furthered the national movement by expanding its territorial base and by giving it enthusiastic leaders. Elucidate. (200 Words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1916 में विश्वयुद्ध के काल में उत्पन्न आर्थिक कष्टों, कठिनाइयों, समस्याओं के साथ-साथ विश्वयुद्ध के बाद स्वशासन की मांग को लेकर तिलक व एनीबेसेंट द्वारा होमरूल की आंदोलन की शुरुआत की गई।

तिलक द्वारा मध्य प्रान्त, बरार व बंबई को छोड़कर महाराष्ट्र में तो ऐनीबेसेंट ने शेष भारत के क्षेत्र में आंदोलन को गति दी। वर्षों तक ठप पड़े राष्ट्रीय आंदोलन, नरमपंथियों की लोकप्रियता में कमी एवं जनता के हृदय में विद्यमान असंतोष के कारण इस आंदोलन के द्वारा देश में गति पकड़ी। यहाँ तक कि कांग्रेस के नरमपंथी नेता भी इससे जुड़ गये।

स्वशासन उठाने की मांग विरोध के तरीके आयरलैंड राष्ट्रवादियों से प्रेरित थे। तिलक ने 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है, जैसे नौ दिवसीय आंदोलन का राष्ट्रीय स्तर पर प्रसार किया।

होमरूल आंदोलन में जिन नई राष्ट्रीय नेताओं का विकास हुआ उनमें प्रमुख थे- जवाहर लाल नेहरू जिन्होंने इलाहाबाद आदि से आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। अन्य स्तरों पर मौलाना अबुल कलाम आजाद, दक्षिण में जॉर्ज अरुंडेल जैसे नेता, बंगाल में जे बनर्जी आदि नेता अपनी होमरूल आंदोलन में अगीदारी के कारण ही राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख भूमिका निभाने में सफल हुए।

इस प्रकार न केवल राष्ट्रीय प्रसार की दृष्टि से बल्कि नये जुझारू नेता तैयार करने की दृष्टि से इस आंदोलन का महत्व अप्रतिम है यद्यपि यह आंदोलन अपने उद्देश्यों में सफल न हो सका एवं जल्द ही ठंडा पड़ गया परन्तु जनता के हृदयों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने में इसका प्रमुख योगदान रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

12. पाइका विद्रोह के स्वरूप की चर्चा करते हुए हाल ही में इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम घोषित (200वीं वर्षगाँठ) किये जाने के कारणों की चर्चा कीजिये। (200 शब्द) 12.5

Highlight the features of Paika rebellion and discuss the reasons behind declaring it as the first struggle for Independence. (200 words) 12.5

अंग्रेजों के द्वारा प्लासी विजय के बाद उड़ीसा पर अधिग्रहण कर लिया गया। उड़ीसा के खुर्दा जिले पर अधिग्रहण के बाद अंग्रेजों ने अपनी नीतियाँ यहाँ लागू की जिसके विरोध में पाइक विद्रोह का जन्म हुआ।

कारण:-
- अंग्रेजों की भू राजस्व नीतियाँ
- पाइकों (लड़ाकू नेता) के परंपरागत अधिकार हीनता
- जमीन के परंपरागत अधिकारों (भूमि पर) का दमन
- कौड़ी मुद्रा को समाप्त कर नई मुद्रा चलाना
- नमक कर

इन कारणों से 'बख्शी जगबन्धु' के नेतृत्व में पाइकों ने अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ने के लिए हिंसक आंदोलन शुरू कर दिया। जिसे अंग्रेजों ने अपनी कठोर एवं निर्ममतापूर्ण दमन के कारण अन्ततः दबा

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिया।

राष्ट्रीय आंदोलन का दर्जा दिए जाने के कारण।

(क) सर्वप्रथम इसी आंदोलन में पूर्णतः संगठित रूप में अंग्रेजी आंदोलन को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया गया था।

(ख) आंदोलन की उग्रता इतनी थी कि अंग्रेजों को हार का सामना करना पड़ा।

(ग) उड़ीसा राज्य के द्वारा भी पिछले अनेक वर्षों से इसे स्वतंत्रता संग्राम (प्रथम) घोषित करने की मांग की जा रही थी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

13. भूदान आंदोलन के उद्देश्यों की चर्चा कीजिये तथा इसकी उपलब्धियों एवं सीमाओं का मूल्यांकन कीजिये। (200 शब्द) 12.5

Discuss the objectives of Bhoodan Movement and evaluate its achievements with respect to its limitations. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूदान आंदोलन महात्मा गांधी के शिष्य आचार्य विनोबा भावे द्वारा स्वतंत्रता के पश्चात भूमि सुधारों के कानूनी प्रयासों के ~~बरक्स~~ गांधीवादी तरीके से भूमि के समत्वपूर्ण आवंटन के लिये चलाया गया था।

तेलगांना में एक सभा के दौरान भावे जी के प्रयासों से ~~अनेक जमींदारों~~ इस आंदोलन की शुरुआत हुई जो अन्ततः पूरे देश में फैल गया। हजारों एकड़ भूमि का दान किया गया।

मुख्यतः भूदान आंदोलन का सिद्धान्त यह था कि भूमि ईश्वर की दी हुई वस्तु है अतः इस पर सभी का बराबर मात्रा में हक विद्यमान है। इसी सिद्धान्त से प्रेरित होकर गांधीवादी तरीके से बिना दबाव के समानता लाने का प्रयास किया गया।

~~के~~ उपलब्धियाँ: (क) पूरे देश में लाखों एकड़

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भूमि का दान किया गया।

(ब) गांधी के हृदय परिवर्तन का सिद्धान्त अनेक जमींदारों की कार्यवाहियों पर देखने को मिला।

(स) भूमि सुधारों के कानूनी प्रयासों के पूरक के रूप में सामाजिक प्रयास के रूप में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीमाएँ: यह आंदोलन लंबे समय तक नहीं चल पाया।

(ख) अपने मूल लक्ष्य (30 लाख एकड़) का एक चौथाई भी प्राप्त नहीं हो पाया।

(स) दी गई भूमि या तो बंजर थी या फिर न्यायिक क्षेत्राधिकार के अंदर विवादित थी।

(द) अनेक जमींदारों ने दान की गई भूमि को पुनः प्राप्त कर लिया।

इन सब सीमाओं के बाद भी समानता लाने के उद्देश्यों हेतु सामाजिक एवं शैक्षिक, गैर-सरकारी प्रयास के रूप में इस आंदोलन का महत्व असंदिग्ध है इन्हीं कारणों से

इसे 'रक्तहीन क्रान्ति' की संज्ञा दी जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

…या इस स्थान में प्रश्न …या के अतिरिक्त कुछ …लिखें।
…ase do not write …thing except the …stion number in …s space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाषः 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पया इस स्थान में प्रश्न ख्या के अतिरिक्त कुछ लिखें।
lease do not write ything except the estion number in is space)

15. औद्योगिक क्रांति को आकस्मिक घटना कहने के बजाय विकास की एक सतत् प्रक्रिया का पड़ाव कहना अधिक उपयुक्त होगा। चर्चा कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The Industrial Revolution was a stage of the process of development rather than a sudden incident. Discuss. (200 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहा जाता है कि 18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति एक आकस्मिक घटना के रूप में फूट पड़ी किन्तु गहराई में उतरने पर परिणाम भिन्न प्राप्त होंगे। निम्न बिन्दुओं के आधार पर वर्णन किया जा सकता है।

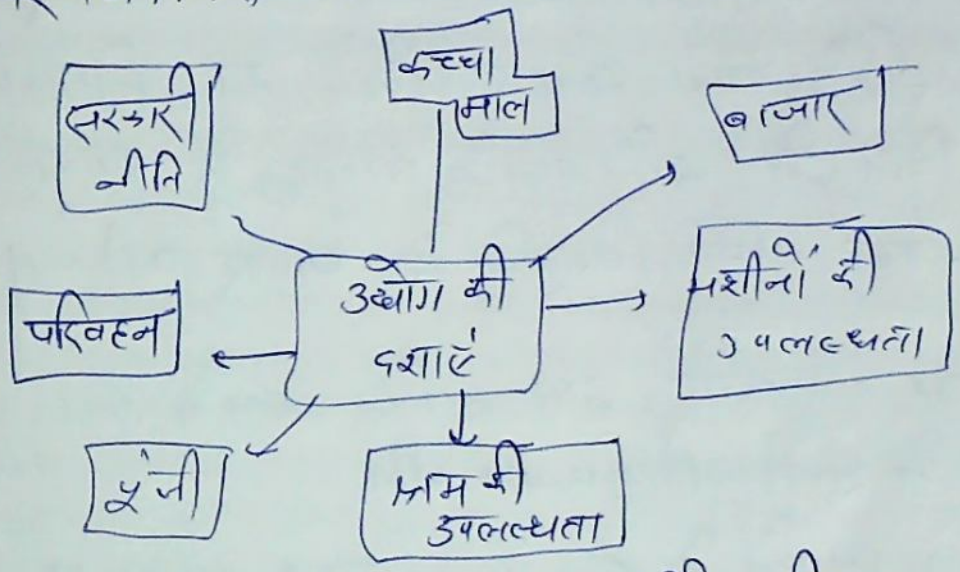

इन सभी कारकों को तत्कालीन इंग्लैण्ड की स्थितियों पर लगाकर देखते हैं।

(क) इंग्लैण्ड में 15-16वीं शताब्दी में हुई कृषि सुधार क्रान्ति ने कृषि का उत्पादन बढ़ा दिया था। अतः इस अधिशेष उत्पादन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाषः 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

हेतु मशीनों की जरूरत हुई।

(ख) नवजागरण, धर्मसुधार, प्रबोधन जैसे आंदोलनों ने परलौकिक की बजाय इहलौकिक वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया जिसके फलस्वरूप वैज्ञानिक आविष्कार हुए जैसे जहाजनिर्माण, कताई मशीनें, प्रिंटिंग प्रेस आदि।

(ग) नवजागरण से प्रेरित खोजों ने व्यापार वृद्धि के साथ-साथ उपनिवेशों का निर्माण किया जो कच्चे माल के उत्पादक के साथ-साथ, निर्मित वस्तुओं के बाजार भी थे।

(घ) व्यापारियों द्वारा अर्जित लाभ के रूप में पूंजी भी विद्यमान थी।

(ङ) जहाजों के रूप में परिवहन सुविधा का होना

(च) कृषि क्रान्ति एवं व्यापार वृद्धि के परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि हुई एवं श्रम की उपलब्धता भी बढ़ी।

दृष्टि The Vision

ा इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ase do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

इस प्रकार औद्योगिक क्रान्ति एक आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि इसके बीज तो ~~नवजागरण~~ पुनर्जागरण के उपरांत हुए परिवर्तनों में मिलते हैं। सुधारों, विकास एवं इंग्लैंड की स्थिति में औद्योगिक क्रान्ति का होना निश्चित था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

16. उपनिवेशवाद का पतन तथा तृतीय विश्व का उद्भव, द्वितीय विश्व युद्ध के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परिणाम थे। समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। (200 शब्द) 12.5

The decline of colonialism and emergence of Third World were the two most important outcomes of the Second World War. Critically evaluate. (200 words) 12.5

द्वितीय विश्व युद्ध, मानव सभ्यता के इतिहास में सबसे प्रचण्ड युद्धों में एक माना जाता है जिसमें व्यापक तौर पर जन, धन हानि हुई।

विश्व युद्ध के उपरांत महाशक्तियों की शक्ति में हुई कमी, उपनिवेशों के राष्ट्रीय आंदोलनों का उदय, नई उदारवादी सरकारों के आगमन, संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं के स्वतंत्रता के मूल्यों के फलस्वरूप एशिया, ~~अमेरिका~~ अफ्रीका के अनेक देश स्वतंत्र हुए, एवं तृतीय विश्व (विकासशील देशों) का निर्माण हुआ। साथ ही उपनिवेशवाद का भी पतन हुआ। अकेले अफ्रीका में 1950 व 1960 के दशक में आधे से अधिक देशों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

प्रश्न यह है कि वास्तव में उपनिवेशवाद समाप्त हो चुका है? गहराई से

देखें तो ऊपरी तौर पर तो आक्रमण कर व्यापारिक स्पर्धात्मकता से युक्त उपनिवेशवाद तो द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाप्त हो गया। परन्तु इसके उपरांत शुरू हुए शीतयुद्ध ने एक नये प्रकार के उपनिवेशवाद को जन्म दिया।

दरअसल, दोनों गुट (पूंजीवादी व साम्यवादी), प्रत्येक स्वतंत्र हुए देश को अपने गुट में मिलाने को प्रयत्नशील रहते थे। इसके लिए वे उस देश पर दबाव, लालच, धमकी आदि साधनों का प्रयोग करते थे। वियतनाम, कोरिया के युद्ध इस बात के बेहतर उदाहरण है, जहाँ दोनों शक्तियों ने अपने स्वार्थों से प्रेरित होकर इन राष्ट्रों की संप्रभुता व स्वतंत्रता का अतिक्रमण किया।

इसके अलावा तृतीय विश्व जो कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन के रूप में अपने सामाजार्थिक विकास हेतु दृढ़ था, वहाँ भी इन शक्तियों ने गुटवादी राजनीति को हवा दी।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सकता है कि ऊपरी तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध ने राष्ट्रों को स्वतंत्रता प्रदान की परंतु शीत युद्ध के जन्म के रूप में उनकी स्वतंत्रता का अतिक्रमण भी किया।

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें **बीस** प्रश्न हैं तथा **हिन्दी** और **अंग्रेज़ी** दोनों में छपे हैं।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **TWENTY** questions printed both in **HINDI** and in **ENGLISH**.*

All the questions are compulsory.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

समग्र मूल्यांकन

(Overall Evaluation)